Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भूगोल

मानव भूगोल के मूल सिद्धान्त

अध्याय–2

विश्व जनसंख्या

वितरण, घनत्व और वृद्धि

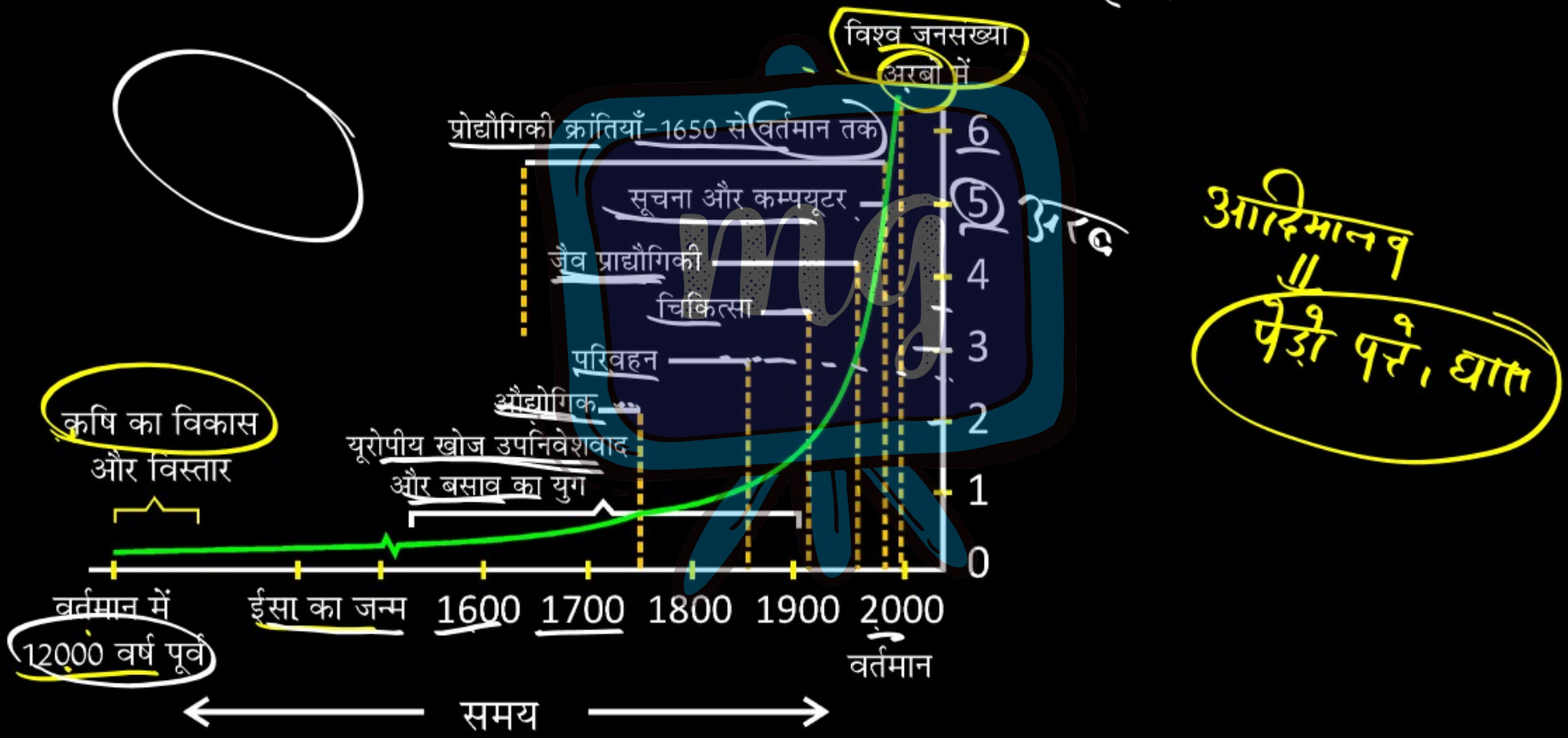
भाग - 8

रामावतार यादव

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियाँ (प्रकृति)



आदिमानव
॥
पेड़ पर, घास

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

औद्योगिक क्रान्ति → उद्योगों में अधिकाधिक वृद्धि होना।

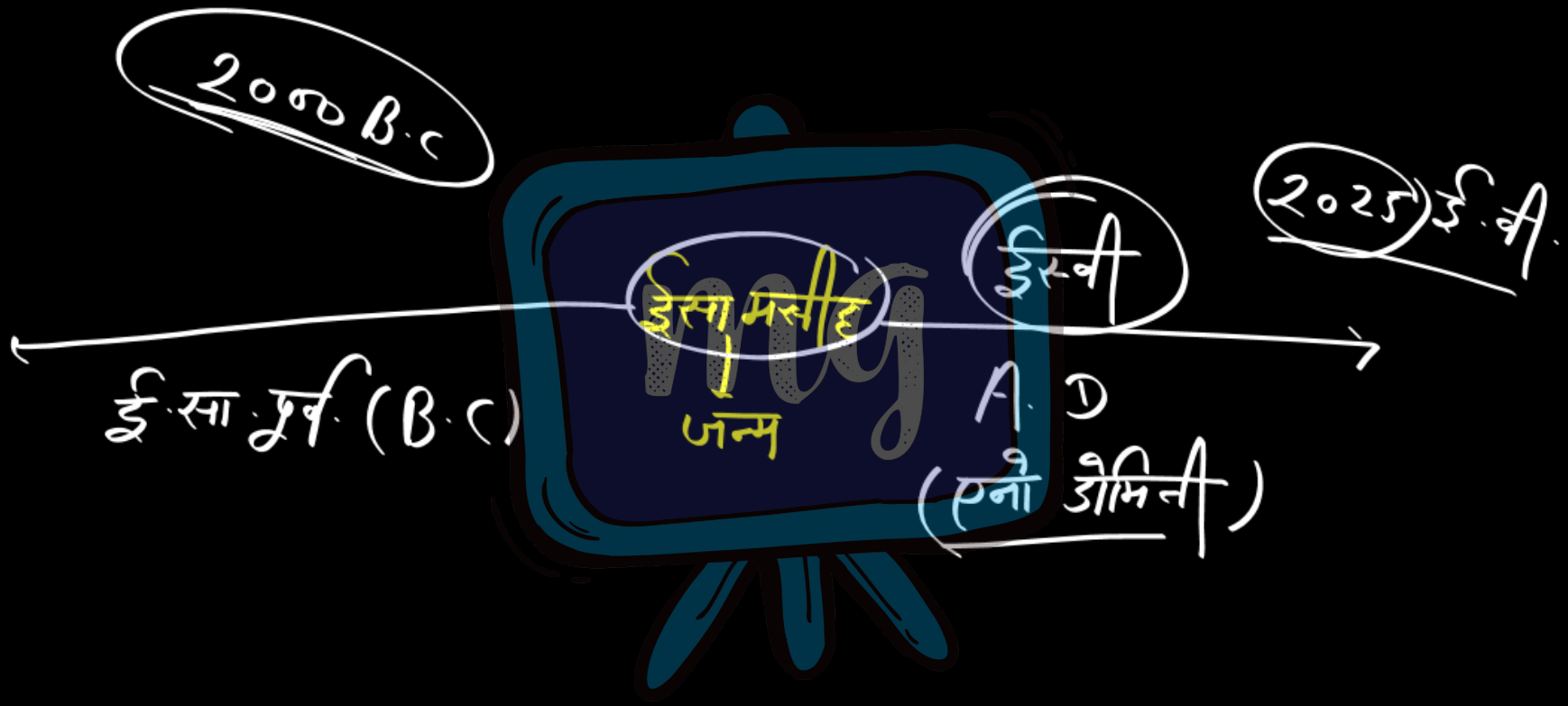
↳ सर्वप्रथम – ब्रिटेन (यूरोप)

18 वीं शताब्दी

(1700–1800 ई. के (1750 ई. के)

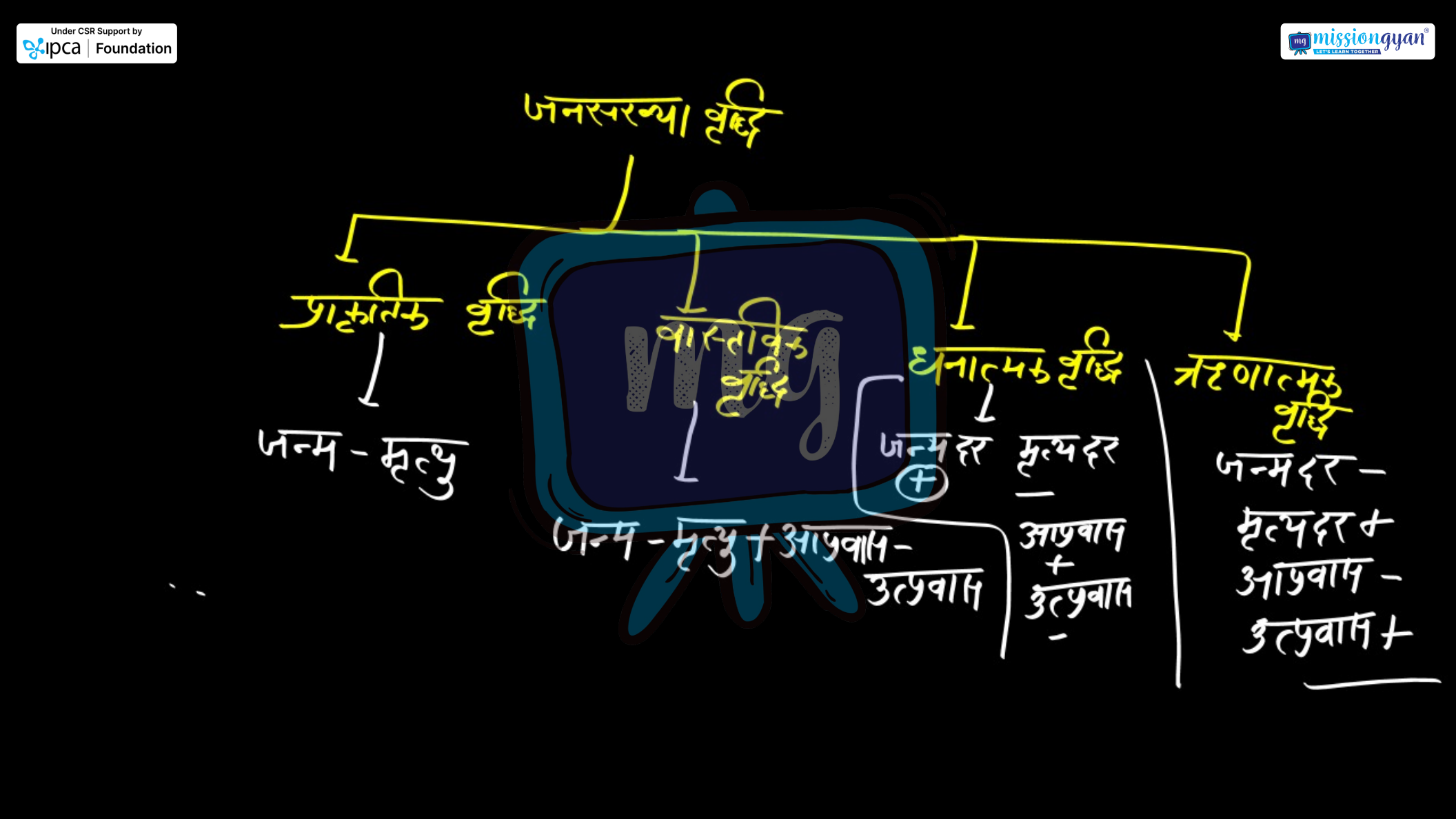
Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

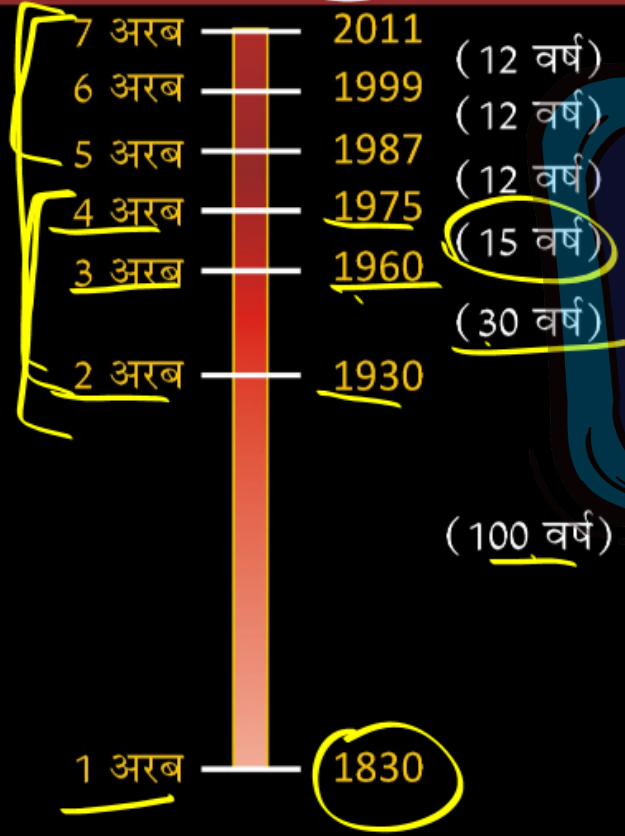


Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

जनसंख्या वृद्धि की प्रकृति

विश्व जनसंख्या के दो गुना होने की अवधि



1 अरब – 12

1 अरब → 12 वर्ष

1 अरब 15 वर्ष

1 अरब → 30 वर्ष

1 अरब → 100 वर्ष

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

विश्व जनसंख्या के दो गुना होने की अवधि

काल	जनसंख्या	अवधि जिसमें जनसंख्या दो गुना हुई
10,000 ई॰ पू॰	50 लाख	
1650 ई॰	50 करोड़	1500 वर्ष
1804 ई॰	100 करोड़	154 वर्ष
1927 ई॰	200 करोड़	123 वर्ष
1974 ई॰	400 करोड़	47 वर्ष
2025 ई॰	800 करोड़ प्रक्षेपित संख्या	51 वर्ष

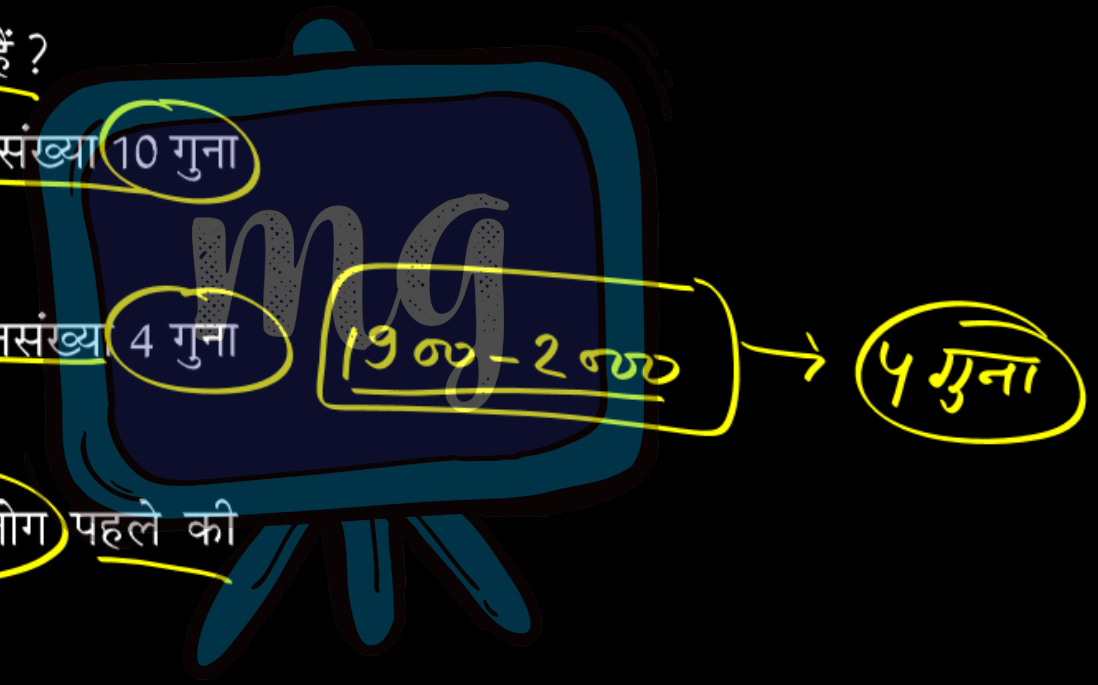
→ ईसा मसीह के जन्म से 10,000 वर्ष पूर्व

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

क्या आप जानते हैं ?

- विगत 500 वर्षों में मानव जनसंख्या 10 गुना से अधिक बढ़ी है।
- अकेले 20 वीं शताब्दी में जनसंख्या 4 गुना बढ़ी है।
- प्रतिवर्ष लगभग 8 करोड़ लोग पहले की जनसंख्या में जुड़ जाते हैं।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

जनसंख्या परिवर्तन के स्थानिक प्रारूप

प्रदेश	वृद्धि दर	
	1990–95	2010–15 (अनुमानित)
विश्व	1.6	1.2
अफ्रीका	2.4	2.6
यूरोप	0.2	0.1
उत्तर अमेरिका	1.4	0.8
लैटिन अमेरिका, कैरेबियन	1.7	1.1
एशिया	1.6	1.0
ओशनिया (आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड और फिजी)	1.5	1.5

1.2 → सर्वा. वृद्धि दर

द. अमेरिका + मध्य अमेरिका (मैक्सिको + कैरेबियन)

1 × (A)

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

जनसंख्या परिवर्तन का प्रभाव

- जनसंख्या वृद्धि
  - बेरोजगारी +
  - संसाधन की दबाव
- जनसंख्या का ह्रास

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

जनांकिकीय संक्रमण सिद्धान्त

- प्रतिपादक :- डब्ल्यू. एम. थॉम्पसेन (1929) एवं नोटेंस्टीन (1945)

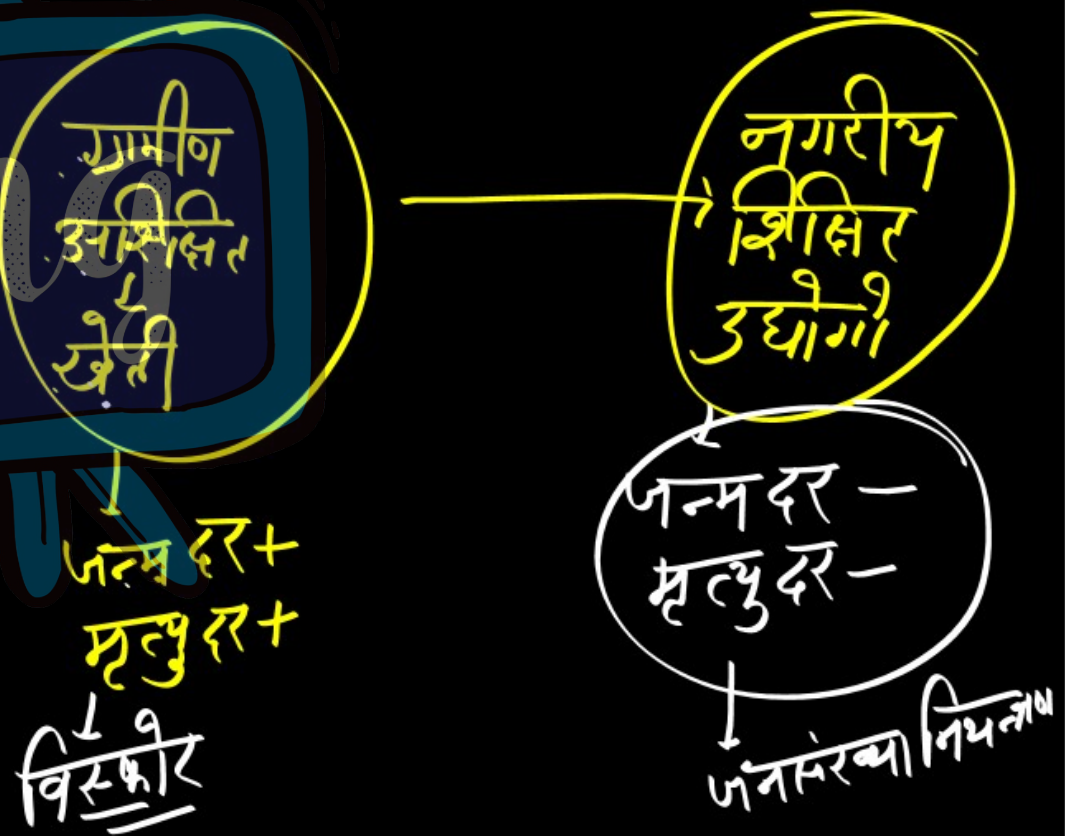
जनसंख्या का अध्ययन → जनांकिकी (डेमोग्राफी)

- जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत का उपयोग किसी क्षेत्र की जनसंख्या के वर्णन तथा भविष्य की जनसंख्या के पूर्वानुमान के लिए किया जाता है।

Under CSR Support by ipca | Foundation

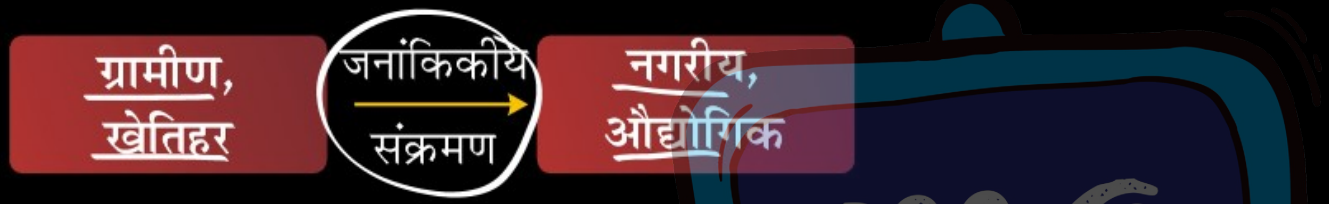
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- इस सिद्धान्त के अनुसार समाज ग्रामीण, खेतिहर और अशिक्षित अवस्था से उन्नति करके नगरीय औद्योगिक और साक्षर बनता है तो किसी प्रदेश की जनसंख्या उच्च जन्म और उच्च मृत्यु से निम्न जन्म व निम्न मृत्यु में परिवर्तित होती है। ये परिवर्तन अवस्थाओं में होते हैं जिन्हें सामूहिक रूप से जनांकिकीय चक्र के रूप में जाना जाता है।



Under CSR Support by ipca | Foundation

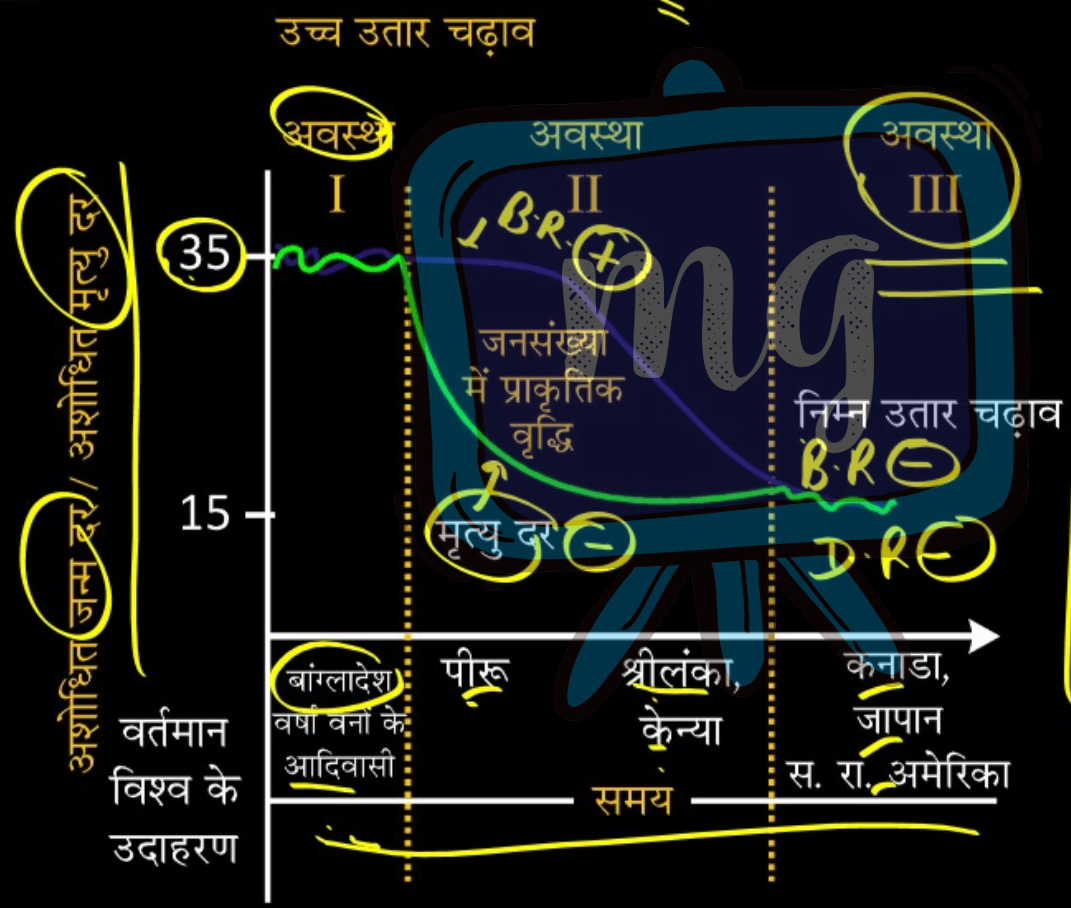
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by ipca Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत की अवस्थाएँ



I अवस्था → B.R (+) D.R (+) अविकसित

II अवस्था → B.R + D.R − विकासशील

III अवस्था → B.R − D.R − विकसित U.S.A फ्रांस बिट्रेन जापान

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

प्रथम अवस्था

- इस अवस्था में उच्च प्रजननशीलता और उच्च मर्त्यता अर्थात् उच्च जन्म-दर और उच्च मृत्यु-दर होती है; क्योंकि लोग महामारियों और भोजन की अनिश्चित आपूर्ति होने के कारण।
- इसमें जीवन प्रत्याशा निम्न, प्रौद्योगिकी का निम्न स्तर तथा अशिक्षित जनसंख्या रहती है है।
- इस अवस्था में लोग कृषि के कार्य में लगे रहते हैं।